प्रातःक्लास 22-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

ओमशान्ति। याद की यात्रा को बच्चों को भूलना नहीं है। सुबह को जैसे कि यह प्रैक्टीस करते हैं। उस में बाणी नहीं चलती है। क्यों कि वह है ही निर्वाण धाम जाने की युक्ति। पावन बनने के सिवाय तो बच्चे जा नहीं सकते हैं। उड़ नहीं सकते हैं। यह भी समझते हो सतयुग जब होता है तो कितने ढेर आत्मायें उड़ जाती हैं। अभी तो कितने करोड़ आत्मायें हैं। वहां (सतयुग) में जाकर कुछ लाख बचते हैं। बाकी सभी उड़ जाते हैं। जरूर कोई तो आकर पर देते हैं ना। इस याद की यात्रा से ही आत्मा पवित्र बनती है। इनके सिवाय और कोई उपाय नहीं है पावन बनने का। पतित पावन भी एक बाप को ही कहते हैं। फिर कोई ईश्वर कहते वा परमात्मा कहते, भगवान कहते। है तो एक ही। अनेक नहीं है। बाप सभी का एक है। लौकिक बाप तो सभी का अपना2 हैं। सतयुग में भी लौकिक बाप सभी का अपना2 हैं। बाकी यह पारलौकिक बाप तो सभी का एक ही है। वह एक जब आते हैं तो सभी को सुख देकर जाते हैं। फिर वहां सुख में उनको याद करने की दरकार नहीं रहती। इसलिए गायन भी है दुःख में सिमरण सब करे सुख करे न कोय। वहां तो दुःख है नहीं। वह भी पास्ट हो गया है। अभी बाप बैठ कर पास्ट, परजेन्ट, फ्युचर का राज़ बताते हैं। झाड़ का पास्ट, परजेन्ट फ्युचर बहुत सहज है। पास्ट तो तुम जानते हो कि कैसे बीज से झाड़ होता है फिर वृधि को पाते2 आखिरीन अन्त आ जाती है। इसको कहा जाता है आदि मध्य अन्त। यह है वैराईटी धर्मों का, वैराईटी फिचर्स का झाड़। सभी के फिचर्स अपने2 हैं। फूलों में तुम देखेंगे जैसा2 झाड़ है, वैसे2 उन से फूल निकलते हैं। उन सभी फूलों के फिचर्स एक रहेंगा। परन्तु इस मनुष्यसृष्टि रूपी झाड़ में वैराईटी है। उस में हरेक झाड़ की अपनी2 शोभा होती है। इस झाड़ में तो अनेक प्रकार के शोभा है। जैसे बाप समझाते हैं श्याम-सुन्दर। यह देवी-देवताओं के लिए ही है। जबकि वह सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हैं तो वही सुन्दर और फिर श्याम बनते हैं। ऐसे श्याम-सुन्दर और कोई धर्मों में नहीं है। क्योंकि ऐसे भी धर्म हैं जो काले ही काले हैं। अफ्रिका के तरफ कितने काले होते हैं। उन्हों के फिचर्स भी देखो। जपानियों के फिचर्स, युरोपियन के फिचर्स, चीनियों के फिचर्स देखो। इण्डिया वालों के फिचर्स बदलते जाते हैं। इन्हों के लिए ही गाया हुआ है श्याम-सुन्दर। यह और कोई धर्म के लिए गायन नहीं है। ऐसे भी नहीं कि काले लोग पहले गोरे थे फिर काले हुये हैं, नहीं। उन्हों के फिचर्स ही और हैं। यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। उस में वैराईटी धर्म है। वह सभी कैसे नम्बरवार आते हैं यह अभी तुम बच्चों को नालेज मिलती है। सन्यासी तो यह बातें समझा न सकें। वह तो है ही भक्ति मार्ग वाले। यह 5000 वर्ष का कल्प है। उनको वृक्ष कहो वा दुनिया कहो। आधा में है भक्ति, जिसको रावण राज्य कहा जाता है। 5 विकारों का राज्य चलता है। काम चिक्षा पर चढ़ कर पतित सांवरे बन जाते हैं। रावण सम्प्रदाय के चलन और इन (ल०ना०) के देवी सम्प्रदाय के चलन में रात-दिन का फर्क है। मनुष्य इन्हों की महिमा गाते हैं। अपने को नीच पापी कहते हैं। यह भी बाप ने समझाया है तुम आपे ही पूज्य और आपे ही पुजारी बनते हो। वह फिर समझाते हैं भगवान ही पूज्य बनता है। भगवान ही पुजारी बनता है। अनेक प्रकार के मनुष्य हैं ना। भक्ति तो तुम ने बहुत की है। पुनर्जन्म लेते भक्ति क्रिश करते आये हो। पहले2 होती है अव्यभिचारी भक्ति। जिसने तुमको मनुष्य से देवता बनाया है। पहले 2 उनकी भक्ति शुरु होती है। फिर भक्ति व्यभिचारी होती जाती है। ताकि अन्त में बिलकुल ही व्यभिचारी बन जाती है। तब फिर बाप आकर अव्यभिचारी ज्ञान देते हैं। वह तो शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग के शास्त्रों का तुमको कितना घमण्ड है। यह है भक्ति का घमण्ड। भक्ति का घमण्ड भी है तो ज्ञान का भी घमण्ड है। भक्ति के घमण्ड को दुर्गति के घमण्ड कहा जाता है। और यह ज्ञान का घमण्ड है सदगति का। क्योंकि ज्ञान से ही सदगति होती है। इनको जबतक पता न है तो भक्ति के ही घमण्ड में रहते हैं। यह पता न है कि ज्ञान का सागर एक ही परमात्मा बाप है। भक्ति में कितने वेद-शास्त्र आदि पढ़ते हैं। जबानी भी सुनाते हैं। यह सभी है भक्ति। कितना

विस्तार है भक्ति का। शोभा है ना। बाप कहते हैं यह रुड के पानी मिशल शोभा है। वह पानी दूर से ऐसा चमकता है जैसे कि चांदी। हिरण को प्यास लगती है तो उस रुड के पानी तरफ भागता है तो उस में ही फंस जाते हैं। भक्ति भी ऐसी है। सभी उसमें फंसते गये हैं। अभी फंस2 कर एकदम गले तक फंस गये हैं तो अ उससे निकालने में बच्चों को कितनी मेहनत लगती है। विघ्न भी बहुत पड़ते हैं। क्योंकि बाप पवित्र बनाते हैं। द्रौपदी ने भी इस पर ही पुकारा है ना। यह सारी दुनया है ही द्रौपदियों दुर्योधनों की। और फिर इस खयाल से कहेंगे तुम सभी पार्वतियां ही अमर कथा सुन रही हो। थी द्रौपदियां, तुमको नंगन करते थे। अभी बाप अमर लोक लिए अमर कथा सुना रहे हैं। यह है मृत्युलोक। क्योंकि अकाले मृत्यु होती रहती है। बैठे2 हार्टफेल हो जाते हैं। तुम हास्पीटल में भी जाकर समझाओ। यहां तुम्हारी आयु कितनी कम है बिमार पड़ते हो। वहां बिमार होंगे ही नहीं। भगवानुवाच अपने को आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो। और औरों से ममत्व मिटा दो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। फिर कबी बिमार होंगे नहीं। काल खायेगा नहीं। आयु भी बड़ी होगी। इन देवताओं की आयु बड़ी थी ना। फिर बड़ी आयु वाले कहां गये? पुनर्जन्म लेते2 आयु कम होती जाती है। यह सुख और दुःख का खेल है। इनको कोई भी जानते नहीं। रचयिता बाप को जानते तो रचना को भी जानते। सभी भक्ति के दुर्गति में फंसे हुये हैं। भक्ति है दुबण। इसमें तो झांझ मेला मलाखड़ा आद कुछ भी नहीं। वहां कुम्भ के मेले आद में कितने मनुष्य जाकर इकट्ठे होते हैं स्नान करने। स्नान से तो कुछ भी होता नहीं है। रोज तुम स्नान करते हो हर जगह पानी तो सागर से ही आता है।

सब से अच्छा पवित्र पानी तो कूआं का होता है। उस में तो कोई भी गन्द आद नहीं पड़ता। नदी में सारा किचड़ा पड़ता है। कूंआ का पानी तो नेचरल ही शुध होता है। तो उनसे ही स्नान करना चाहिए ना। पहले ऐसा रिवाज था। पीछे नदी का रिवाज निकला है। भक्ति मार्ग में स्वच्छता को पसन्द ही नहीं करते हैं। अभी पुकारते हैं आकर स्वच्छ बनाओ। सभी छी छी हैं। नानक ने भी उनी महिमा गाई है। भूत पलीति कपड़ धोये। बाप ही आकर भूत पलीतों को स्वच्छ बनाते हैं। पहले तो आत्मा को स्वच्छ बनाते हैं। वहलोग आत्मा को निर्लेप समझते हैं। तो बाप कहते हैं यह भक्ति मार्ग है ही अज्ञान मार्ग। घोर अंधियारा। इनको कहा जाता है आसुरी राज्य। वह है ईश्वरीय राज्य। यह है रावण राज्य। क्योंकि सृष्टि की उतरती कला है। गायन भी है चढ़ती कला सर्व का भला। सर्व की सदगति हो जाती है। हे बाबा तेरे द्वारा सर्व का भला होता है। सतयुग में सभी का भला हो जाता। वहां भी शान्ति और एक राज्य है। बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। अभी वह लोग माथा मारते रहते हैं विश्व में शान्ति हो। उन से जाकर पूछो कब आगे विश्व में शान्ति हुई है? कब थी, जो फिर मांगते हो। तुम थोड़ा जबसमझाते हो तो फिर कहते हैं अभी 40हजार वर्ष पड़े हैं फिर पीछे सतयुग आवेगा। मनुष्य घोड़ घोर-अंधियारे में है ना। कहां 5000वर्ष, का सारा कल्प कहां कहां यह एक कलियुग को ही 40 हजार वर्ष कह देते हैं। अनेक मतें अनेक बातें हैं। बाप आकर सच्च बताते हैं। जन्म भी 84 ही है। लाखों वर्ष हो तो मनुष्य जनावर आद भी बन सकें। परन्तु कायदा ही नहीं है।

84 जन्म मनुष्य का ही लेते हैं। उसका हिसाब किताब भी बता देते हैं। यह नालेज तुम बच्चों को धारण करनी है। ऋषि मुनि आद तो नेती2 फिरते गये हैं। अर्थात हम नहीं जानते। तो नास्तिक ठहरे ना। जरूर फिर कोई आस्तिक भी होंगे। आस्तिक हैं देवतायें। नास्तिक है रावणराज्य। ज्ञान से तुम आस्तिक बनते हो। फिर 2। जन्मों का वर्सा मिल जाता है। फिर ज्ञान का दरकार ही नहीं रहती। अभहै पुरुषोत्तम संगम युग। जब कि हम उत्तम ते उत्तम पुरुष स्वर्ग का मालिक बन रहे हैं। इस जितना जो पढ़ेंगे उतना ऊंच बनेंगे। पढ़ेंगे लिखेंगे होंगे विश्व के मालिक। नहीं तो कम पद। यहां भी सफाई आद करने वाले तो होंगे ना। परन्तु राजाई है सुख की। यहां है दुःख की। आस्तिक बनते हैं तो सुख की राजाई करते हैं। फिर रावण आने

नास्तिक बनते हैं। तो फिर दुःख होता है। भारत कितना सालवेन्ट था। अथाह धन था। सोमनाथ का मंदिर कि कितना भरी बनाया हुआ ऊ था। मंदिर बनाने लिए ही इतने पैसे थे। तो खुद के पास कितने होंगे। यह सभी इतने पैसे कहां ग्रब्रे? से मिली? शास्त्रों में दिखाय है सागरे ने रत्नों की थाली भेंट की। अभी ज्ञान सागर तुमको रत्नों का थालियां भरकर देते हैं। अभी तुम्हारी झोली भर रही है। वह फिर शंकर के आगे जाकर कहते हैं भर दे भर दे झोली कहते हैं। बाप को ही नहीं जानते। अभी तुम जानते हो बाप हमारी झोली भर रहे हैं। जितना जिसको चाहिए भरे। जितना अच्छी रीत पढ़ेंगे उतना ही स्कालरशिप मिलेगा। चाहे तो ऊंच ते ऊंचडबल सिरताज बनो। चाहे तो जाकर चण्डाल बनो। बहुत है जो फारकती, डायवोर्स भी दे देते हैं। फारकती बच्चे देते हैं, डायवोर्स स्त्री देती है पति को। यह भी ड्रामा में नूंध है। बाप कहते हैं मुझे कोई फिक्र नहीं। मैं तो फिक्र से फारग हूं। तुमको भी कर रहा हूं। फिक्र से फारग किया सदगुरु... स्वामी जो सभी का स्वामी अर्थात बाप है। उनको मालिक भी कहते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम्हारा बेहद का टीचर भी हूं। भक्ति मार्ग में तो अनेक टीचर्स अनेक बिदयायें पढ़ते हो। बाप जो तुमको पढ़ाते हैं यह तो नालेज सब से न्यारी है। वह है ही ज्ञान कासागर। जानी जाननहार नहीं कहना। ऐसे बहुत कहते हैं आप तो सब कुछ हमारे अन्दर के जानते हो। बाप कहते हैं मैं कुछ नहीं जानता। तख्त पर सिर्फ शिव बाबा बैठा है। और तो कुछ है नहीं। बाकी तो यह शरीर कचड़ा है। आत्मा निकल जाती है तो इस कचड़े को जलाया जाता है। आत्मा ही चीज़ है। कितनी छोटी बिन्दी है। यह भी किसको पता नहीं है कि आत्मा क्या चीज़ है। तब ही बाबा कहते हैं पहले तो आत्मा को समझो। फिर बाप को भी समझेंगे। बाप पहले2 आत्मा का ज्ञान समझाते हैं। अपना परिचय देते हैं। आगे तुम जानते थे क्या। कि आत्मा अविनाशी है। शालीग्राम बना करपूजा करते थे। फिर खलास कर देते। बाप कहते हैं यह सभी है गुड्डियों की पूजा। बेसमझी से करते हैं। जानते नहीं। न शिव को न आत्मा को न ल०ना० को जानते। सच्चों को भी नहीं जानते तो झूठों को भी नहीं जानते। बाप समझाते हैं यह भी कोई नई बात नहीं। फिर भी ऐसे होंगे। तुम बन्दर से मन्दर लायक बनते हो। फिर बन्दर बनेंगे। सतयुग में थोड़े ही पता होगा हम फिर बन्दर बनेंगे। यहसिर्फ संगम पर ही पता है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। जो अच्छी रीत समझते हैं वह औरों को धारण कराते हैं। बाप कल्याण कारी है तो बच्चे भी बनते हैं कोई तो औरों को दुर्गुण से निकालते2 खुद ही फंस पड़ते हैं। अपवित्र बन पड़ते हैं। की कमाई चट हो जाती है। काम की कमाई चट की चट करदेती है। इसलिए बाप कहते हैं खबरदार रहना। काम चिक्षा पर न चढ़ना। काम चिक्षा पर चढ़ने से ही तुम काले बन गये हो। तुम कहेंगे हम ही गोरे थे फिर हम ही सांवरे बने हैं। हम ही देवता थे फिर नीचे उतरे। नहीं तो 84 जन्म कौन लेते। यह हिसाब किताब बाप ही समझाते हैं। बाकी वह तो सभी है भक्ति मार्ग के शास्त्र। और ढेर के ढेर गुरु। ज्ञान मार्ग लिए ज्ञान सागर तो एक ही हैं। वह गुरु तो अनेक हैं। स्त्री कोकहते हैं यह पति तुम्हारा ईश्वर गुरु है। उनकी आज्ञा पर चलना। पहले आज्ञा करते हैं काम कटारी की। यह तो बच्चे समझते हैं मेहनत करनी पड़ती है। आधा कल्प विषय सागर में पड़े हैं। उन से निकलना मासी का घर नहीं। तुम थोड़ा भी ज्ञान देते हो तो उसका विनाश ही नहीं होता। प्रजा बनते हैं। कथा तो है सत्य नारायण ब्रत बताने की। फिर प्रजा भी बनते हैं। थोड़ा जो समझ कर जाते हैं हो सकता है फिर आकर समझे। आगे चल कर मनुष्यों को वैराग्य भी बहुत होगा। जैसे श्मशान में मनुष्यों कोवैराग्य होता है ना। श्मशान से बाहर निकले खलास। तुम जब समझाते हो तो बहुत अच्छा2 करते हैं। बाहर गया बस। ज्ञान गुम। बाप को कहते हैं बस हम यह काम उतार कर आ जावेंगे। बाहर गया, माया माया ही भूल लेती है। कोटों में कोई... निकलते हैं। राज्यपद पाना इसमें मेहनत है। हरेक अपने दिल से पूछे बेहद के बाप को हम याद करते हैं। कहते हैं हम भूल जाते हैं। और बेहद के बाप को भूल जाते हो? लौकिक बाप को कब नहीं भूलते। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।